

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 16, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

Q1. मगध के उत्कर्ष और महाजनपदों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मगध के राजनीतिक विस्तार में न केवल सैन्य शक्ति की भूमिका थी, बल्कि उपजाऊ कृषि भूमि, लोहे के संसाधनों और महत्वपूर्ण नदी मार्गों तक इसकी पहुँच ने भी इसमें सहायता की।
2. मगध की भौगोलिक स्थिति ने इसे कृषि अधिशेष (surplus) के संचय के लिए प्राथमिक रूप से लंबी दूरी के समुद्री व्यापार पर निर्भर बना दिया था।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या:

कथन 1 सही है। मगध के उत्कर्ष को केवल इसके शासकों के व्यक्तित्व या सैन्य विजय के माध्यम से नहीं समझाया जा सकता है। इसके भौगोलिक और पारिस्थितिकीय परिवेश ने कई संरचनात्मक लाभ प्रदान किए।

मगध गंगा और उसकी सहायक नदियों के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों से जुड़े क्षेत्र में स्थित था। इसने कृषि के विस्तार और अधिशेष (surplus) के उत्पादन को सुगम बनाया। समीपवर्ती क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों की ओर, लौह अयस्क की उपलब्धता औजारों और हथियारों के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण थी। लोहे की तकनीक से वनों की कटाई के साथ-साथ कृषि विस्तार को बढ़ावा मिला।

नदी प्रणाली इसका एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ थी। गंगा और उसकी सहायक नदियों ने संचार, आवाजाही और परिवहन के अपेक्षाकृत कुशल साधन प्रदान किए। इसलिए नदी मार्गों पर नियंत्रण से राजनीतिक सत्ता और आर्थिक एकीकरण दोनों को मजबूती मिली।

कथन 2 गलत है। मगध कृषि अधिशेष के लिए प्राथमिक रूप से लंबी दूरी के समुद्री व्यापार पर निर्भर नहीं था। इसका उत्कर्ष समुद्री व्यापार पर निर्भरता के बजाय गंगा घाटी और उसके आसपास के संसाधन क्षेत्रों की उत्पादक क्षमता से गहराई से जुड़ा हुआ था।

यह प्रश्न जानबूझकर राज्य निर्माण की एक सरलीकृत व्याख्या को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रारंभिक ऐतिहासिक भारत में राजनीतिक शक्ति का उदय पारिस्थितिकी, कृषि अधिशेष, प्रौद्योगिकी, संसाधन उपलब्धता, व्यापार मार्गों और सैन्य संगठन की परस्पर क्रिया (interaction) से हुआ था।

इस प्रकार, सही उत्तर **(c)** है।

Q2. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्राथमिक अनुक्रमण (Primary Succession) और द्वितीयक अनुक्रमण (Secondary Succession) के बीच सबसे सटीक अंतर स्पष्ट करता है?

- (a) प्राथमिक अनुक्रमण वहाँ शुरू होता है जहाँ एक समुदाय पूरी तरह से नष्ट हो गया हो, जबकि द्वितीयक अनुक्रमण केवल जलीय पारिस्थितिक तंत्र में शुरू होता है।
- (b) प्राथमिक अनुक्रमण ऐसे सब्सट्रेट (आधार) पर शुरू होता है जहाँ विकसित मृदा प्रोफ़ाइल का अभाव होता है, जबकि द्वितीयक अनुक्रमण आमतौर पर वहाँ होता है जहाँ पिछली कम्युनिटी की मिट्टी और कुछ जैविक अवशेष (legacies) बने रहते हैं।
- (c) प्राथमिक अनुक्रमण आवश्यक रूप से द्वितीयक अनुक्रमण की तुलना में तेजी से आगे बढ़ता है क्योंकि पायनियर (पायनियर) प्रजातियों को कम प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
- (d) द्वितीयक अनुक्रमण आवश्यक रूप से ठीक उसी प्रजाति संरचना को पुनर्जीवित करता है जो व्यवधान (disturbance) से पहले मौजूद थी।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: पारिस्थितिक अनुक्रमण (Ecological succession) समय के साथ किसी पारिस्थितिक समुदाय की संरचना और घटकों में होने वाले दिशात्मक परिवर्तन को संदर्भित करता है।

प्राथमिक अनुक्रमण में, बसने की प्रक्रिया (colonisation) एक ऐसे आधार (substrate) पर शुरू होती है जहाँ विकसित मृदा प्रोफ़ाइल अनुपस्थित या अनिवार्य रूप से अनुपलब्ध होती है। इसके उदाहरणों में नई उजागर हुई चट्टानी सतहें, नए बने ज्वालामुखीय आधार या पीछे हटते ग्लेशियरों द्वारा उजागर हुई सतहें शामिल हैं। पायनियर जीव धीरे-धीरे मिट्टी के निर्माण में योगदान करते हैं और पर्यावरणीय परिस्थितियों को संशोधित करते हैं, जिससे बाद के समुदायों को स्थापित होने का अवसर मिलता है।

द्वितीयक अनुक्रमण में, एक जैविक समुदाय बाधित/नष्ट हो गया होता है, लेकिन मिट्टी, पोषक तत्व, सूक्ष्मजीव, बीज, जड़ें या अन्य प्रोपेग्यूलस जैसे महत्वपूर्ण घटक बने रह सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, इसमें सुधार/पुनर्प्राप्ति आमतौर पर प्राथमिक अनुक्रमण की तुलना में तेजी से होती है।

- **विकल्प (a) गलत है** क्योंकि द्वितीयक अनुक्रमण केवल जलीय पारिस्थितिक तंत्र तक सीमित नहीं है।
- **विकल्प (c) सामान्य पारिस्थितिक अंतर को उलट देता है।** प्राथमिक अनुक्रमण आम तौर पर धीमा होता है, क्योंकि इसमें मिट्टी का निर्माण और प्रारंभिक उपनिवेशीकरण (initial colonisation) होना होता है।
- **विकल्प (d) गलत है** क्योंकि द्वितीयक अनुक्रमण आवश्यक रूप से सटीक पिछली प्रजाति संरचना को पुनरुत्पादित नहीं करता है। व्यवधान के बाद का वातावरण, जलवायु, व्यवधान की तीव्रता और प्रजातियों की उपलब्धता भिन्न हो सकती है।

इसके पीछे गहरा पारिस्थितिक सिद्धांत यह है कि पारिस्थितिक तंत्र में जैविक अवशेष (biological legacies) मौजूद होते हैं। मिट्टी, बीज बैंक, जीवित जीव और पोषक तत्वों के पूल पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्प्राप्ति के प्रक्षेपवक्र (trajectory) को काफी हद तक प्रभावित कर सकते हैं।

इसलिए, **(b)** सही है।

Q3. मुद्रा और बैंकिंग प्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वाणिज्यिक बैंकों पर लगाई गई आरक्षित आवश्यकता (Reserve Requirement) में वृद्धि, अन्य बातें समान रहने पर, उनकी जमा विस्तार (deposit expansion) की संभावित क्षमता को कम कर सकती है।
2. मनी मल्टिप्लायर (मुद्रा गुणक) आरक्षित धन (reserve money) और मुद्रा आपूर्ति (money supply) के बीच एक यांत्रिक रूप से निश्चित संबंध को दर्शाता है जो जनता के मुद्रा-धारण (currency-holding) व्यवहार से अप्रभावित रहता है।
3. वाणिज्यिक बैंक ऋण विस्तार की प्रक्रिया के माध्यम से जमा का निर्माण कर सकते हैं, लेकिन इस तरह के जमा निर्माण का यह अर्थ नहीं है कि बैंक नियामक, तरलता और मांग की बाधाओं से स्वतंत्र होकर असीमित ऋण शक्ति का निर्माण कर सकते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

कथन 1 सही है। आरक्षित आवश्यकता (Reserve Requirement) जमा के उस अनुपात को निर्धारित करती है जिसे बैंकों को भंडार के रूप में बनाए रखना अनिवार्य होता है। अन्य बातें समान रहने पर, एक उच्च आरक्षित आवश्यकता उधार देने के लिए उपलब्ध जमा के अनुपात को कम करती है और परिणामस्वरूप बैंकिंग प्रणाली की संभावित जमा-विस्तार क्षमता को घटा देती है।

कथन 2 गलत है।

मनी मल्टिप्लायर आवश्यक रूप से एक यांत्रिक रूप से तय स्थिरांक (fixed constant) नहीं है। अधिक यथार्थवादी मौद्रिक प्रणाली में, मुद्रा निर्माण कई कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें जनता की मुद्रा रखने की प्राथमिकता, बैंकों का अतिरिक्त भंडार (excess reserves), ऋण की मांग, नियामक आवश्यकताएं और व्यापक वित्तीय स्थितियां शामिल हैं।

यह ठीक वही बिंदु है जहाँ प्रश्न विश्लेषणात्मक हो जाता है। पाठ्यपुस्तक के मल्टिप्लायर का सरलीकृत अनुप्रयोग इस गलत निष्कर्ष की ओर ले जा सकता है कि बेस मनी में प्रत्येक वृद्धि स्वचालित रूप से ब्रॉड मनी (व्यापक मुद्रा) में आनुपातिक और अनुमानित वृद्धि उत्पन्न करती है।

कथन 3 सही है।

वाणिज्यिक बैंक तब जमा का निर्माण करते हैं जब वे ऋण देते हैं या वित्तीय संपत्तियां खरीदते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनके पास धन बनाने की असीमित क्षमता है। क्रेडिट निर्माण (ऋण सृजन) पूंजीगत आवश्यकताओं, तरलता की स्थितियों, विनियमन, उधारकर्ताओं की साख, लाभप्रदता और ऋण की मांग से सीमित होता है।

महत्वपूर्ण अंतर बेस मनी और ब्रॉड मनी के बीच है। केंद्रीय बैंक की मौद्रिक स्थितियों को निर्धारित करने में एक प्रमुख भूमिका होती है, जबकि वाणिज्यिक बैंक क्रेडिट संचालन के माध्यम से जमा निर्माण में महत्वपूर्ण रूप से भाग लेते हैं।

इसलिए, केवल दो कथन सही हैं — **(b)**।

Q4. भारतीय न्यायपालिका और संवैधानिक व्याख्या के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. न्यायिक समीक्षा (Judicial Review) अदालतों को विधायी और कार्यपालिका की कार्यवाहियों की संवैधानिक वैधता की जांच करने में सक्षम बनाती है।
2. सर्वोच्च न्यायालय की न्यायिक समीक्षा की शक्ति विशेष रूप से केवल संसद द्वारा स्पष्ट रूप से अमान्य (void) घोषित कानूनों तक ही सीमित है।
3. सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन के लिए रिट जारी कर सकते हैं, हालांकि इस संबंध में उनका अधिकार क्षेत्र एक समान नहीं है।
4. न्यायिक समीक्षा की शक्ति को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संवैधानिक ढांचे के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में माना गया है जिसे एक साधारण संवैधानिक संशोधन के माध्यम से पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1, 3 और 4 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

कथन 1 सही है।

न्यायिक समीक्षा संवैधानिक अदालतों को यह जांचने में सक्षम बनाती है कि क्या विधायी और कार्यपालिका की कार्यवाहियाँ संविधान के अनुरूप हैं या नहीं। जहाँ कोई कार्यवाई संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन करती है, न्यायपालिका एक उपयुक्त उपाय प्रदान कर सकती है।

कथन 2 गलत है।

संसद के पास यह निर्धारित करने का अनन्य अधिकार नहीं है कि उसका कानून संवैधानिक रूप से वैध है या नहीं। न्यायिक समीक्षा सटीक रूप से इसलिए मौजूद है क्योंकि अदालतें स्वतंत्र रूप से संवैधानिक वैधता की जांच कर सकती हैं। संविधान सर्वोच्च कानूनी ढांचा है जिसके खिलाफ विधायी और कार्यकारी कार्यवाहियों का परीक्षण किया जा सकता है।

कथन 3 सही है।

अनुच्छेद 32 के तहत सर्वोच्च न्यायालय और अनुच्छेद 226 के तहत उच्च न्यायालय दोनों के पास रिट अधिकार क्षेत्र है। हालाँकि, उनके दायरे भिन्न हैं। अनुच्छेद 32 विशेष रूप से मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन से जुड़ा है, जबकि अनुच्छेद 226 उच्च न्यायालयों को न केवल मौलिक अधिकारों के लिए बल्कि "किसी अन्य उद्देश्य के लिए" भी रिट जारी करने का अधिकार देता है।

इस प्रकार, पाठ्य विस्तार के मामले में अनुच्छेद 226 व्यापक है, यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय एक विशिष्ट संवैधानिक स्थान रखता है।

कथन 4 सही है।

सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक समीक्षा को संवैधानिक योजना का एक महत्वपूर्ण घटक माना है और इसे मूल संरचना सिद्धांत (basic structure doctrine) से जोड़ा है। नतीजतन, संविधान में संशोधन करने की संसद की शक्ति की व्याख्या न्यायिक समीक्षा के पूर्ण विनाश की अनुमति देने के रूप में नहीं की जा सकती है।

यहाँ वैचारिक भ्रम न्यायिक समीक्षा को केवल एक अन्य सामान्य न्यायिक शक्ति मानने में निहित है। यह संवैधानिक सर्वोच्चता, कानून के शासन (rule of law) और सीमित सरकार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, तीन कथन सही हैं — (c)।

Q5. निम्नलिखित अभिकथन (Assertion) और नीचे दिए गए दो कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

अभिकथन (Assertion):

किसी क्षेत्र में गहन कृषि विकास (Intensive agricultural development) के परिणामस्वरूप आवश्यक रूप से टिकाऊ भूमि-संसाधन उपयोग नहीं होता है।

कारण I (Reason I):

बार-बार खेती, अत्यधिक सिंचाई और अनुपयुक्त कृषि पद्धतियाँ मृदा क्षरण, लवणीकरण (salinisation), जलभराव (waterlogging) और मृदा पोषक तत्वों की कमी में योगदान दे सकती हैं।

कारण II (Reason II):

भूमि की कृषि क्षमता केवल उसकी प्राकृतिक उर्वरता से निर्धारित होती है और इसलिए सिंचाई, तकनीक, फसल पद्धतियों या संस्थागत हस्तक्षेपों से अप्रभावित रहती है।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

(a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों अभिकथन की व्याख्या करते हैं।

(b) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण I ही अभिकथन की व्याख्या करता है।

(c) कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।

(d) कारण I गलत है, लेकिन कारण II सही है।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या:

अभिकथन सही है। कृषि का गहनताकरण (Intensification) किसी दिए गए क्षेत्र से उत्पादन में काफी वृद्धि कर सकता है, लेकिन उच्च कृषि उत्पादकता का स्वतः यह अर्थ नहीं है कि अंतर्निहित भूमि-संसाधन आधार का उपयोग टिकाऊ (sustainable) तरीके से किया जा रहा है।

कारण I सही है और सीधे अभिकथन की व्याख्या करता है। जब संसाधनों का उपयोग पारिस्थितिक तंत्र की पुनर्योजी क्षमता (regenerative capacity) से अधिक हो जाता है तो गहन कृषि पर्यावरणीय दबाव पैदा कर सकती है। अत्यधिक सिंचाई के परिणामस्वरूप जलभराव और लवणीकरण हो सकता है, जबकि उपयुक्त पोषक तत्व प्रबंधन के बिना निरंतर खेती मृदा क्षरण और घटती मिट्टी की उर्वरता में योगदान कर सकती है। इसी तरह, एकल-फसल (monocropping), अत्यधिक रासायनिक इनपुट, अनुपयुक्त जुताई और अपर्याप्त मृदा संरक्षण कटाव को तेज कर सकते हैं और मिट्टी की गुणवत्ता को कम कर सकते हैं।

कारण II गलत है।

कृषि क्षमता केवल प्राकृतिक उर्वरता से निर्धारित नहीं होती है। भूमि उत्पादकता मिट्टी की विशेषताओं, पानी की उपलब्धता, जलवायु, प्रौद्योगिकी, सिंचाई, फसल चयन, उर्वरक प्रबंधन, संरक्षण पद्धतियों, बुनियादी ढांचे और संस्थागत व्यवस्थाओं के संयोजन से प्रभावित होती है।

यह अंतर भौगोलिक विश्लेषण के लिए केंद्रीय है। भूमि केवल एक स्थिर प्राकृतिक संसाधन नहीं है जिसका उत्पादक मूल्य स्थिर रहता है। मानवीय हस्तक्षेप इसकी उत्पादक क्षमता को बढ़ा भी सकते हैं और घटा भी सकते हैं।

उदाहरण के लिए, सिंचाई अन्यथा पानी की कमी वाले क्षेत्र में कृषि की संभावनाओं को बदल सकती है। हालाँकि, यदि सिंचाई का ठीक से प्रबंधन न किया जाए, तो वही हस्तक्षेप अंततः लवणता या जलभराव के माध्यम से मिट्टी को खराब कर सकता है। इस प्रकार, एक तकनीक जो शुरू में उत्पादक क्षमता का विस्तार करती है, संसाधन-प्रबंधन सुरक्षा उपायों के बिना लागू होने पर पारिस्थितिक बाधाएं उत्पन्न कर सकती है।

इसलिए यह प्रश्न **कृषि गहनता (agricultural intensification)** और **टिकाऊ गहनता (sustainable intensification)** के बीच अंतर का परीक्षण करता है।

टिकाऊ भूमि उपयोग के लिए मृदा संरक्षण, कुशल सिंचाई, फसल विविधीकरण, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, जलग्रहण क्षेत्र (watershed) प्रबंधन और उपयुक्त भूमि-उपयोग नियोजन जैसे उपायों के माध्यम से समय के साथ संसाधनों की उत्पादक क्षमता को बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

इसलिए, **कारण I सही है, कारण II गलत है, और सही उत्तर (c) है।**

Dream | Dare | Deliver

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q1. तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार (Tenzing Norgay National Adventure Awards) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यह पुरस्कार भारत का सर्वोच्च राष्ट्रीय साहसिक-खेल सम्मान है और यह भू, जल और वायु में शामिल साहसिक गतिविधियों में असाधारण उपलब्धि की मान्यता में प्रदान किया जाता है।

2. यह पुरस्कार संवैधानिक रूप से राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों से अलग है और रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदान किया जाता है क्योंकि साहसिक गतिविधियों को मुख्य रूप से रक्षा-संबंधित गतिविधियों के रूप में माना जाता है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या:

कथन 1 सही है। तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार (TNNA) भारत में साहसिक खेलों का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है। यह पुरस्कार सहनशक्ति, साहस, जोखिम लेने की क्षमता और तकनीकी दक्षता का प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों को चार श्रेणियों में दिया जाता है: स्थल साहसिक कार्य (Land Adventure), जल साहसिक कार्य (Water Adventure), वायु साहसिक कार्य (Air Adventure) और लाइफटाइम अचीवमेंट।

कथन 2 गलत है। यह पुरस्कार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय (Ministry of Youth Affairs and Sports) द्वारा प्रशासित और प्रदान किया जाता है, न कि रक्षा मंत्रालय द्वारा। इसे भारत के प्रमुख खेल सम्मानों के बीच 'अर्जुन पुरस्कार' के समकक्ष स्तर पर माना जाता है।

यह पुरस्कार पहली बार 1993 में "राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार" के रूप में शुरू किया गया था और 2003 में 1953 में सर एडमंड हिलेरी के साथ माउंट एवरेस्ट की ऐतिहासिक चढ़ाई करने वाले तेनजिंग नोर्गे की स्मृति में इसका नाम बदल दिया गया।

Q2. पृथ्वी अवलोकन उपग्रह जैसे EOS-05 को किसी विशिष्ट क्षेत्र के निरंतर अवलोकन के लिए भू-समकालिक/भू-स्थैतिक (geosynchronous/geostationary) कक्षा में स्थापित करने का मुख्य लाभ क्या है?

- (a) यह सभी अवलोकनों से वायुमंडलीय हस्तक्षेप को समाप्त कर देता है क्योंकि उपग्रह वायुमंडल से ऊपर रहता है।
- (b) यह उच्च पुनरावलोकन आवृत्ति (high revisit frequency) के साथ एक ही व्यापक क्षेत्र के निरंतर अवलोकन की अनुमति देता है, जिससे यह तेजी से बदलती घटनाओं की निगरानी के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो जाता है।
- (c) यह उपग्रह को उसकी ऑप्टिकल प्रणाली के आकार की परवाह किए बिना किसी भी निम्न-पृथ्वी-कक्षा (LEO) उपग्रह की तुलना में समान रूप से उच्च स्थानिक रिज़ॉल्यूशन (spatial resolution) प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।
- (d) यह उपग्रह को भौगोलिक उत्तरी ध्रुव के ऊपर स्थायी रूप से रहने की अनुमति देता है जबकि पृथ्वी उसके नीचे घूमती है।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या:

विकल्प (b) सही है। भू-स्थैतिक/भू-समकालिक कक्षा (लगभग 35,786 किमी की ऊंचाई) में स्थित उपग्रह की कक्षीय अवधि पृथ्वी की घूर्णन अवधि (23 घंटे, 56 मिनट) के बराबर होती है। इसके परिणामस्वरूप उपग्रह पृथ्वी के एक विशिष्ट क्षेत्र (जैसे भारतीय उपमहाद्वीप) के सापेक्ष लगभग स्थिर दिखाई देता है। यह विशेषता चक्रवात, बाढ़, जंगल की आग और तीव्र मौसमी बदलावों जैसे तेजी से विकसित होने वाले घटनाक्रमों का निरंतर और बिना रुके अवलोकन (high revisit frequency) संभव बनाती है।

- **विकल्प (a) गलत है:** अंतरिक्ष में होने के बावजूद, ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड तरंगों को वायुमंडलीय बादलों, धुंध और गैसों का सामना करना पड़ता है।
- **विकल्प (c) गलत है:** उच्च कक्षा (36,000 किमी) में होने के कारण LEO उपग्रहों (500-800 किमी) की तुलना में स्थानिक रिज़ॉल्यूशन (spatial resolution) कम हो जाता है, न कि बढ़ता।
- **विकल्प (d) गलत है:** भू-स्थैतिक कक्षा केवल भूमध्य रेखा (Equator) के ऊपर होती है, ध्रुवों के ऊपर नहीं।

Q3. एससीओ (SCO) बिश्केक घोषणापत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शंघाई सहयोग संगठन (SCO) ने पुष्टि की है कि यह किसी विशेष देश के खिलाफ निर्देशित सैन्य-राजनीतिक गठबंधन नहीं है।
2. घोषणापत्र प्रतिभागी देशों के बीच व्यापार और वित्तीय सहयोग के लिए राष्ट्रीय मुद्राओं और वैकल्पिक भुगतान तंत्रों के अधिक उपयोग का समर्थन करता है।
3. क्षेत्रीय बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का मूल्यांकन करते समय कनेक्टिविटी के प्रति एससीओ का संस्थागत दृष्टिकोण संप्रभुता या क्षेत्रीय अखंडता को कोई महत्व नहीं देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** बिश्केक घोषणापत्र ने यह स्पष्ट दोहराया कि शंघाई सहयोग संगठन (SCO) एक पारंपरिक सैन्य-राजनीतिक गुट या गठबंधन नहीं है और यह किसी तीसरे देश के विरुद्ध लक्षित नहीं है।
- **कथन 2 सही है:** सदस्य देशों ने आपस में व्यापार, निवेश और वित्तीय लेनदेन के लिए अपनी-अपनी राष्ट्रीय मुद्राओं के उपयोग और वैकल्पिक भुगतान बुनियादी ढांचे को विकसित करने पर बल दिया।
- **कथन 3 गलत है:** घोषणापत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि क्षेत्रीय कनेक्टिविटी परियोजनाओं (जैसे INSTC आदि) को बढ़ावा देते समय सभी सदस्य देशों की **संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और अंतर्राष्ट्रीय कानून** के सिद्धांतों का पूर्ण सम्मान किया जाना अनिवार्य है।

इसलिए, केवल दो कथन सही हैं — (b)।

Q4. प्रस्तावित सार्वजनिक बीमा रजिस्ट्री (Public Insurance Registry - PIR) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रस्तावित PIR की परिकल्पना एक 'डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर' (DPI) के रूप में की गई है जिसका उद्देश्य बीमा संबंधी जानकारी के अंतर-संचालनीय (interoperable) आदान-प्रदान और सत्यापन को सुगम बनाना है।
2. इसके प्रस्तावित आर्किटेक्चर के तहत, सभी भाग लेने वाले संस्थानों से प्राथमिक बीमा रिकॉर्ड आवश्यक रूप से एक केंद्रीय रूप से नियंत्रित डेटा वेयरहाउस में स्थानांतरित किए जाएंगे।
3. यह आर्किटेक्चर सामान्य मानकों और प्रोटोकॉल के माध्यम से जानकारी तक अधिकृत पहुँच की अनुमति देते हुए स्रोत प्रणाली की प्राथमिकता (source-system primacy) को बनाए रखने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** PIR को एक जनसंख्या-स्तरीय (population-scale), खुले और अंतर-संचालनीय डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के रूप में डिजाइन किया जा रहा है ताकि बीमा क्षेत्र में सूचना विषमता (information asymmetry) को समाप्त किया जा सके।
- **कथन 2 गलत है:** PIR एक विशाल केंद्रीकृत डेटाबेस (centralised data silo) **नहीं** है। यह प्राथमिक डेटा को मूल बीमा प्रदाताओं के पास ही बनाए रखता है।
- **कथन 3 सही है:** PIR एक **संघीकृत (Federated/Decentralised) आर्किटेक्चर** पर काम करता है। यह "स्रोत प्रणाली की प्राथमिकता" (source-system primacy) के सिद्धांत का पालन करता है, जहाँ डेटा मूल स्थान पर ही सुरक्षित रहता है, और सहमत मानकों एवं सहमति-आधारित (consent-based) प्रोटोकॉल के माध्यम से केवल आवश्यक जानकारी ही सत्यापित/साझा की जाती है।

अतः, दो कथन सही हैं — (b)।

Q5. भारत की हब-एंड-स्पोक (Hub-and-Spoke) विमानन रणनीति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हब-एंड-स्पोक मॉडल में, क्षेत्रीय हवाई अड्डे 'स्पोक' के रूप में कार्य कर सकते हैं जो यात्री यातायात को 'हब' के रूप में कार्य करने वाले प्रमुख अंतरराष्ट्रीय गेटवे हवाई अड्डों की ओर एकत्रित करते हैं।
2. थ्रू-टिकटिंग (Through-ticketing) और सामान स्थानांतरण (Baggage transfer) हब पर घरेलू-से-अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन के दौरान यात्रियों को सामान एकत्र करने और फिर से चेक-इन करने की आवश्यकता को कम कर सकते हैं।
3. इस मॉडल का आर्थिक तर्क आंशिक रूप से यात्री मांग को समेकित करने की संभावना से उत्पन्न होता है, जिससे प्रत्येक क्षेत्रीय शहर से सीधी सेवाएं संचालित करने की तुलना में लंबी दूरी की अंतरराष्ट्रीय सेवाएं अधिक व्यावहारिक (viable) बन जाती हैं।
4. हब-एंड-स्पोक मॉडल आवश्यक रूप से विदेशी ट्रांजिट हब पर सभी निर्भरता को समाप्त कर देता है क्योंकि भारत से शुरू होने वाले प्रत्येक अंतरराष्ट्रीय यात्री को भारतीय हब के माध्यम से ही जुड़ना होगा।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1, 2 और 3 सही हैं, जबकि कथन 4 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** इस मॉडल में छोटे/क्षेत्रीय हवाई अड्डे 'स्पोक' (Spokes) होते हैं जो यात्रियों को मुख्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे यानी 'हब' (Hub - जैसे दिल्ली या मुंबई) तक लाते हैं।
- **कथन 2 सही है:** एक एकीकृत हब मॉडल थ्रू-टिकटिंग और स्वचालित बैगेज ट्रांसफर की सुविधा देता है, जिससे यात्रियों को कनेक्टिंग उड़ानों के दौरान सामान की दोबारा री-चेकिंग की परेशानी नहीं होती।
- **कथन 3 सही है:** नेटवर्क घनत्व (Network density) का लाभ उठाते हुए, यह मॉडल विभिन्न छोटे शहरों की मांग को एक हब पर इकट्ठा करता है, जिससे लंबी दूरी की बड़ी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की सीटें आसानी से भर जाती हैं और उनका संचालन किफायती हो जाता है।
- **कथन 4 गलत है:** कथन में प्रयुक्त शब्द "आवश्यक रूप से" (necessarily) इसे गलत बनाता है। यह रणनीति विदेशी हब (जैसे दुबई या दोहा) पर निर्भरता को कम करने का लक्ष्य रखती है, लेकिन यात्रियों पर भारतीय हब से ही जाने की कोई अनिवार्य बाध्यता लागू नहीं करती। यात्री अभी भी सीधी उड़ानों या वैकल्पिक मार्गों का चयन कर सकते हैं।

अतः, तीन कथन सही हैं — (c)।

Q6. पिचवरम मैंग्रोव वन (Pichavaram Mangrove Forest), जो हाल ही में अपने पारिस्थितिक और आर्थिक महत्व के लिए चर्चा में था, कहाँ स्थित है?

- (a) ओडिशा, महानदी डेल्टा और चिल्का लैगून प्रणाली के साथ

- (b) तमिलनाडु, कोरोमंडल तट के साथ वेल्लार और कोलेरून नदी प्रणालियों के बीच
(c) आंध्र प्रदेश, कृष्णा-गोदावरी डेल्टा के भीतर
(d) केरल, पेरियार और भरतपुझा नदियों के बीच बैकवाटर प्रणाली के भीतर

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या:

विकल्प (b) सही है। पिचवरम मैंग्रोव वन तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले में कोरोमंडल तट पर स्थित है। यह उत्तर में **वेल्लार मुहाने (Vellar estuary)** और दक्षिण में **कोलेरून/कौलेराम (Coleroon) मुहाने** के बीच किल्लई बैकवाटर प्रणाली का हिस्सा है।

यह विश्व के सबसे बड़े मैंग्रोव पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है। इसकी मुख्य पारिस्थितिक विशेषताएँ:

- यह तटीय क्षेत्रों को तूफानी लहरों और क्षरण से सुरक्षा प्रदान करता है।
- यह मछलियों, झींगों और केकड़ों के लिए एक महत्वपूर्ण नर्सरी ग्राउंड (प्रजनन स्थल) है।
- यह एक मान्यता प्राप्त **रामसर आद्रभूमि (Ramsar Wetland Site)** है और ब्लू कार्बन (Blue Carbon) के भंडारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS-1

Q1. “भारतीय समाज के रूपांतरण को परंपरा से आधुनिकता की ओर एक साधारण संक्रमण के रूप में नहीं समझा जा सकता है; इसके बजाय, आधुनिक संस्थाओं ने अक्सर मौजूदा सामाजिक संरचनाओं के साथ बातचीत की है और उन्हें नया रूप दिया है।” उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर (Sample Answer)

भारतीय समाज ने औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, लोकतंत्रीकरण, प्रवासन, तकनीकी परिवर्तन और वैश्वीकरण के माध्यम से गहरे बदलावों का अनुभव किया है। हालाँकि, इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप पारंपरिक संस्थाओं का आधुनिक संस्थाओं द्वारा पूरी तरह से विस्थापन शायद ही कभी हुआ हो। इसके बजाय, भारतीय आधुनिकता पारंपरिक संरचनाओं और आधुनिक संस्थाओं के बीच अंतःक्रिया, अनुकूलन और प्रतिस्पर्धा की एक जटिल प्रक्रिया के माध्यम से उभरी है।

जाति की संस्था इस जटिलता को दर्शाती है। आधुनिक शिक्षा, शहरी रोजगार और संवैधानिक समानता ने जाति से जुड़े कुछ पारंपरिक प्रतिबंधों को कमजोर किया है। संविधान अस्पृश्यता का निषेध करता है और सकारात्मक कार्रवाई (आरक्षण) तंत्र प्रदान करता है। फिर भी जाति गायब नहीं हुई है। इसके बजाय, इसने जाति संघों, चुनावी लामबंदी और प्रतिनिधित्व की मांगों के माध्यम से लोकतांत्रिक राजनीति के अनुकूल खुद को ढाल लिया है।

इसी तरह, शहरीकरण, प्रवासन और महिला शिक्षा के प्रभाव में **पारिवारिक संरचनाएं** बदल गई हैं। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों (nuclear households) का विस्तार हुआ है। हालाँकि, विवाह, विरासत, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सहायता के लिए नातेदारी नेटवर्क (kinship networks) महत्वपूर्ण बने हुए हैं। इस प्रकार, आधुनिकता ने नातेदारी को समाप्त किए बिना परिवार को संशोधित किया है।

शिक्षा का प्रसार एक अन्य महत्वपूर्ण रूपांतरण का प्रतिनिधित्व करता है। आधुनिक शिक्षा व्यक्तिगत उपलब्धि, वैज्ञानिक तर्क और व्यावसायिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है। फिर भी शैक्षणिक अवसर वर्ग, जाति, लिंग, क्षेत्र और डिजिटल बुनियादी ढांचे तक पहुंच से प्रभावित रहते हैं। परिणामस्वरूप, आधुनिक संस्थाएं एक साथ अवसर पैदा भी कर सकती हैं और असमानताओं को पुनरुत्पादित भी कर सकती हैं।

शहरीकरण इस अंतःक्रिया को और अधिक प्रदर्शित करता है। शहर व्यावसायिक गतिशीलता, व्यक्तिवाद और विविध संस्कृतियों के संपर्क को आसान बनाते हैं। साथ ही, प्रवासी अक्सर भाषाई, धार्मिक और क्षेत्रीय पहचान बनाए रखते हैं। इसलिए शहरी पड़ोस ऐसे स्थान बन सकते हैं जहाँ पारंपरिक पहचानों को नए रूपों में पुनरुत्पादित किया जाता है।

लोकतंत्र ने भी इसी तरह सामाजिक संबंधों को बदल दिया है। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार ने ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर मौजूद समूहों को अधिक राजनीतिक आवाज दी है। जाति, जातीयता, लिंग और क्षेत्रीय पहचान के इर्द-गिर्द राजनीतिक लामबंदी दर्शाती है कि लोकतांत्रिक संस्थाएं केवल सामाजिक पहचान को समाप्त नहीं करती हैं; वे नए मंच प्रदान कर सकती हैं जिनके माध्यम से इन पहचानों को व्यक्त किया जाता है।

वैश्वीकरण और डिजिटल तकनीक ने इन प्रक्रियाओं को तेज कर दिया है। सोशल मीडिया पारंपरिक सत्ता को चुनौती दे सकता है और सूचना तक पहुंच का विस्तार कर सकता है, लेकिन यह सामुदायिक नेटवर्क और पहचान-आधारित लामबंदी को भी मजबूत कर सकता है।

इसलिए, भारतीय आधुनिकता को किसी एकल पश्चिमी मॉडल की ओर एक रेखीय गति के बजाय **"बहुविध आधुनिकताओं" (multiple modernities)** की अवधारणा के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है। पारंपरिक संस्थाएं कुछ क्षेत्रों में घट सकती हैं जबकि अन्य में अनुकूलन कर सकती हैं।

मुख्य समाजशास्त्रीय सबक यह है कि सामाजिक परिवर्तन में **निरंतरता और रूपांतरण दोनों** शामिल हैं। आधुनिक संस्थाएं नए मूल्यों, अवसरों और संगठन के रूपों को पेश करती हैं, लेकिन उनका संचालन भारत की मौजूदा सामाजिक संरचनाओं द्वारा मध्यस्थता (mediate) के जरिए होता है।

इस प्रकार, भारतीय समाज न तो एक अपरिवर्तित पारंपरिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है और न ही एक पूर्ण आधुनिक अलगाव का। यह एक निरंतर विकसित हो रहा संश्लेषण (evolving synthesis) है जिसमें परंपरा अक्सर आधुनिकता द्वारा बदल दी जाती है, जबकि आधुनिकता स्वयं परंपरा द्वारा आकार लेती है।

GS-2

Q2. "स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्यों के पुनर्गठन ने यह साबित किया कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं का समायोजन राष्ट्रीय एकीकरण को अनिवार्य रूप से कमजोर करने के बजाय मजबूत कर सकता है।" परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर (Sample Answer)

स्वतंत्रता के समय, भारत को भाषाई, सांस्कृतिक, जातीय और क्षेत्रीय पहचानों से युक्त एक असाधारण रूप से विविध समाज विरासत में मिला था। इस विविधता का एक लोकतांत्रिक संघ में एकीकरण नए गणराज्य के सामने सबसे

महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक था। राज्यों का पुनर्गठन, विशेष रूप से भाषाई आधार पर, यह दर्शाता है कि क्षेत्रीय आकांक्षाओं का लोकतांत्रिक समायोजन राष्ट्रीय एकीकरण का एक साधन बन सकता है।

शुरुआत में, भाषाई पुनर्गठन को लेकर काफी हिचकिचाहट थी। नेतृत्व को डर था कि भाषाई पहचान के आधार पर राज्यों का निर्माण अलगाववाद को बढ़ावा दे सकता है और राष्ट्रीय एकता को कमजोर कर सकता है। हालाँकि, **राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Commission)** ने भाषाई आकांक्षाओं के व्यावहारिक और लोकतांत्रिक महत्व को पहचाना और भारतीय संघ की एकता को बनाए रखते हुए राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की।

एक पृथक तेलुगु भाषी राज्य के लिए लंबे आंदोलन के बाद 1953 में **आंध्र राज्य का गठन** एक बड़ा मोड़ बना। इसके बाद के **राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956** ने भाषाई और प्रशासनिक विचारों के आधार पर भारत के बड़े हिस्सों का पुनर्गठन किया।

यह प्रक्रिया भारतीय संघवाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता को रेखांकित करती है: **लचीलापन (flexibility)**। संविधान ने संसद को राज्यों की सीमाओं, क्षेत्रों और नामों को बदलने की शक्ति प्रदान की। इसने राजनीतिक व्यवस्था को संघ के मौलिक पुनर्गठन की आवश्यकता के बिना बदलती क्षेत्रीय मांगों को समायोजित करने में सक्षम बनाया।

बाद के घटनाक्रमों ने इस लचीलेपन को और मजबूत किया। 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात का निर्माण हुआ, जबकि पूर्वोत्तर में विशिष्ट जातीय और भौगोलिक आकांक्षाओं के जवाब में कई राज्य उभरे। बाद की मांगों के परिणामस्वरूप 2000 में उत्तराखंड, झारखंड और छत्तीसगढ़ तथा 2014 में तेलंगाना जैसे राज्यों का निर्माण हुआ।

हालाँकि, केवल राज्य पुनर्गठन से सभी क्षेत्रीय आकांक्षाएँ हल नहीं हो सकती हैं। संसाधन वितरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक मान्यता, रोजगार और विकास के मुद्दे क्षेत्रीय मांगों उत्पन्न करते रहते हैं।

इसके अलावा, क्षेत्रीय पुनर्गठन पर अत्यधिक निर्भरता कभी-कभी नए बने राज्यों के भीतर नए अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक संबंध पैदा कर सकती है। इसलिए, संघीय समायोजन को विकेंद्रीकरण, संवैधानिक सुरक्षा उपायों, वित्तीय संघवाद (fiscal federalism) और समावेशी विकास द्वारा पूरा किया जाना चाहिए।

भारतीय अनुभव फिर भी एक महत्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धांत को प्रदर्शित करता है: **पहचान की मान्यता को राजनीतिक विखंडन के बराबर होने की आवश्यकता नहीं है।** जब नागरिकों को लगता है कि उनकी भाषाई या सांस्कृतिक पहचान को संवैधानिक ढांचे के भीतर वैध मान्यता मिल सकती है, तो गैर-संवैधानिक लामबंदी का प्रोत्साहन कम हो सकता है।

इसलिए भारतीय संघवाद एक कठोर क्षेत्रीय व्यवस्था के बजाय एक अनुकूलन योग्य तंत्र के रूप में विकसित हुआ है। क्षेत्रीय आकांक्षाओं को बार-बार चुनावों, राज्य निर्माण, संवैधानिक प्रावधानों और राजनीतिक बातचीत के माध्यम से मुख्यधारा में लाया गया है।

अतः, राज्यों का पुनर्गठन यह साबित करता है कि राष्ट्रीय एकीकरण के लिए अनिवार्य रूप से एकरूपता (uniformity) की आवश्यकता नहीं होती है। विविधता की संस्थागत मान्यता के माध्यम से एकता को मजबूत किया जा सकता है, बशर्ते कि क्षेत्रीय आकांक्षाएँ संवैधानिक ढांचे के भीतर रहें।

GS-3

Q3. “शासन सुधारों के लिए सरकार-केंद्रित प्रशासन से सहयोगात्मक और नेटवर्कयुक्त शासन की ओर बदलाव की बढ़ती आवश्यकता है।” भारत की बदलती विकासात्मक चुनौतियों के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर (Sample Answer)

शासन (Governance) 'सरकार' (Government) की तुलना में व्यापक है। जबकि सरकार मुख्य रूप से राज्य की औपचारिक संस्थाओं को संदर्भित करती है, शासन में वे प्रक्रियाएं शामिल हैं जिनके माध्यम से सार्वजनिक, निजी और नागरिक-समाज के प्रतिनिधि सामूहिक रूप से सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हैं। भारत की तेजी से जटिल होती विकासात्मक चुनौतियों ने सहयोगात्मक और नेटवर्कयुक्त शासन की ओर बदलाव को आवश्यक बना दिया है।

पारंपरिक सरकार-केंद्रित प्रशासन पदानुक्रमित (hierarchical) संरचनाओं के माध्यम से काम करता है। मंत्रालय नीतियां बनाते हैं, विभाग कार्यक्रमों को लागू करते हैं और नागरिकों को मुख्य रूप से लाभार्थियों के रूप में देखा जाता है। ऐसा दृष्टिकोण अधिकार, विनियमन और पुनर्वितरण वाले कार्यों के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है, लेकिन कई समकालीन चुनौतियों का समाधान अकेले सरकार द्वारा नहीं किया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन इसका एक स्पष्ट उदाहरण प्रदान करता है। जलवायु जोखिमों के प्रबंधन के लिए केंद्र और राज्य सरकारों, नगरपालिकाओं, व्यवसायों, वैज्ञानिकों, समुदायों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है। किसी भी एकल विभाग के पास सभी आवश्यक संसाधन और विशेषज्ञता नहीं होती है।

इसी तरह, **शहरी शासन** के लिए नगर निगमों, विकास प्राधिकरणों, परिवहन एजेंसियों, उपयोगिताओं (utilities), निजी सेवा प्रदाताओं और नागरिकों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। विखंडित संस्थागत जिम्मेदारियां अन्यथा यातायात भीड़, खराब कचरा प्रबंधन और अपर्याप्त जल निकासी जैसी समस्याएं पैदा कर सकती हैं।

डिजिटल शासन ने नागरिकों और राज्य के बीच संबंधों को और बदल दिया है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिकायत निवारण और खुले सरकारी डेटा (open government data) के मंच लेन-देन लागत को कम कर सकते हैं और पारदर्शिता में सुधार कर सकते हैं। हालाँकि, डिजिटल शासन गोपनीयता, साइबर सुरक्षा और डिजिटल पहुँच से वंचित नागरिकों के बहिष्करण से संबंधित चिंताएँ भी पैदा करता है।

स्थानीय संसाधनों से जुड़े क्षेत्रों में **सहभागी शासन (Participatory governance)** विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। ग्राम सभाएं, स्वयं सहायता समूह, नागरिक-समाज संगठन और सामुदायिक संस्थान स्थानीय ज्ञान का योगदान कर सकते हैं जो केंद्रीकृत नौकरशाही के पास नहीं हो सकता है।

यहाँ **सह-उत्पादन (co-production)** की अवधारणा उपयोगी है। नागरिक सार्वजनिक सेवाओं के केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैं; वे उन्हें डिजाइन करने, निगरानी करने और वितरित करने में भाग ले सकते हैं। कल्याणकारी कार्यक्रमों के तहत सामाजिक अंकेक्षण (Social audits) यह दर्शाते हैं कि नागरिक जवाबदेही में कैसे योगदान दे सकते हैं।

हालाँकि, नेटवर्कयुक्त शासन अपनी खुद की चुनौतियाँ पैदा करता है। बहु-हितधारकों की उपस्थिति अस्पष्ट जवाबदेही पैदा कर सकती है। निजी भागीदारी वाणिज्यिक प्रोत्साहनों और जनहित के बीच संघर्ष उत्पन्न कर सकती है। शक्तिशाली हितधारक सहभागी प्रक्रियाओं पर हावी हो सकते हैं।

इसलिए, सहयोगात्मक शासन के लिए पारदर्शी अनुबंध, जिम्मेदारियों का स्पष्ट विभाजन, स्वतंत्र विनियमन, सामाजिक अंकेक्षण, शिकायत निवारण तंत्र और सार्वजनिक प्रकटीकरण जैसे संस्थागत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है।

भारत के विकासात्मक पथ को तेजी से ऐसे ही संस्थागत समन्वय की आवश्यकता है। डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे से लेकर जलवायु अनुकूलन, स्वास्थ्य, शहरीकरण और पर्यावरण प्रबंधन तक, समस्याएं अधिक अंतर-संबंधित, अंतर-क्षेत्रीय और बहु-स्तरीय होती जा रही हैं।

इस प्रकार, शासन सुधार का अर्थ राज्य को नेटवर्क से बदलना नहीं होना चाहिए। बल्कि, इसके लिए एक सक्षम राज्य की आवश्यकता है जो गैर-सरकारी प्रतिनिधियों के साथ काम करते हुए समन्वय, विनियमन, सुविधा प्रदान कर सके और जवाबदेह बना रह सके।

उभरता हुआ मॉडल इसलिए न तो "सरकार बनाम समाज" है और न ही "राज्य बनाम बाजार", बल्कि एक ऐसा संस्थागत ढांचा है जिसमें राज्य की क्षमता और सामाजिक भागीदारी एक-दूसरे को मजबूत करती हैं।

GS-4

Q4. "लोक प्रशासन में सबसे कठिन नैतिक निर्णय तब उत्पन्न होते हैं जब दो या दो से अधिक वैध मूल्य एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर (Sample Answer)

नैतिक दुविधाएं तब उत्पन्न होती हैं जब किसी व्यक्ति को कार्रवाई के ऐसे प्रतिस्पर्धी तरीकों के बीच चयन करना पड़ता है, जिनमें से प्रत्येक एक वैध नैतिक मूल्य द्वारा समर्थित होता है। लोक प्रशासन में, ऐसी दुविधाएं विशेष रूप से जटिल होती हैं क्योंकि सिविल सेवक एक साथ कानून, संस्थागत जिम्मेदारी, संवैधानिक मूल्यों और जनता की उम्मीदों के तहत काम करते हैं।

गोपनीयता और पारदर्शिता के बीच संघर्ष पर विचार करें। सरकारी अधिकारियों के पास संवेदनशील जानकारी हो सकती है जिसका प्रकटीकरण राष्ट्रीय सुरक्षा या व्यक्तिगत गोपनीयता को नुकसान पहुंचा सकता है। साथ ही, नागरिकों की पारदर्शिता और जवाबदेही में वैध रुचि होती है। नैतिक निर्णय लेने के लिए वास्तव में संवेदनशील जानकारी को उस जानकारी से अलग करने की आवश्यकता होती है जो प्रशासन के लिए केवल असुविधाजनक है।

एक अन्य उदाहरण **सख्त समानता और सारभूत न्याय (substantive justice) के बीच संघर्ष** है। प्रत्येक नागरिक के साथ समान व्यवहार करना निष्पक्ष लग सकता है। हालाँकि, संरचनात्मक नुकसान का सामना करने वाले व्यक्तियों को सार्थक समानता प्राप्त करने के लिए भिन्न सहायता की आवश्यकता हो सकती है। सकारात्मक कार्रवाई (आरक्षण) आंशिक रूप से इसी सिद्धांत पर आधारित है।

एक ज़िला मजिस्ट्रेट को **विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संघर्ष** का भी सामना करना पड़ सकता है। एक बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजना रोजगार और कनेक्टिविटी उत्पन्न कर सकती है लेकिन जंगलों या स्थानीय समुदायों की आजीविका को खतरे में डाल सकती है। हर परियोजना को खारिज करना विकासात्मक जरूरतों की उपेक्षा करेगा, जबकि सुरक्षा उपायों के बिना हर परियोजना को मंजूरी देना पर्यावरणीय नैतिकता की उपेक्षा करेगा। उचित प्रतिक्रिया में आनुपातिकता (proportionality), साक्ष्य-आधारित मूल्यांकन और शमन (mitigation) शामिल हैं।

इसी तरह, आपदा के दौरान, एक प्रशासक को प्रतिस्पर्धी समूहों के बीच दुर्लभ राहत संसाधनों को आवंटित करना पड़ सकता है। निष्पक्षता वस्तुनिष्ठ मानदंडों की मांग करती है, जबकि करुणा के लिए विशेष रूप से कमजोर आबादी को प्राथमिकता देने की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए नैतिक निर्णय लेने के लिए व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के बजाय पारदर्शी मानदंडों की आवश्यकता होती है।

वफादारी और सत्यनिष्ठा (loyalty and integrity) के बीच संघर्ष एक और महत्वपूर्ण दुविधा है। एक सिविल सेवक से किसी वरिष्ठ के निर्णय को लागू करने की उम्मीद की जा सकती है, लेकिन उसे पता चल सकता है कि यह निर्णय अवैध है या जनहित के लिए गंभीर रूप से हानिकारक है। नैतिक साहस के लिए अंधभक्ति या प्राधिकार की सार्वजनिक रूप से अवहेलना करने के बजाय उपयुक्त संस्थागत चैनलों के माध्यम से आपत्तियां उठाने की आवश्यकता होती है।

कई नैतिक ढांचे निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं:

- **कर्तव्यशास्त्रीय नीतिशास्त्र (Deontological ethics)** कर्तव्यों और नियमों पर जोर देता है;
- **परिणामवाद (Consequentialism)** परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है;
- **सद्गुण नीतिशास्त्र (Virtue ethics)** चरित्र का परीक्षण करता है; और
- **संवैधानिक नैतिकता (Constitutional morality)** अधिकारों, न्याय और गरिमा का एक ढांचा प्रदान करती है।

हालाँकि, कोई भी एकल ढांचा हर प्रशासनिक दुविधा के लिए पर्याप्त नहीं है। एक व्यावहारिक दृष्टिकोण में शामिल होना चाहिए:

1. सभी हितधारकों की पहचान करना।
2. लागू कानून और संस्थागत कर्तव्यों को स्थापित करना।
3. प्रतिस्पर्धी नैतिक सिद्धांतों की पहचान करना।
4. अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों का मूल्यांकन करना।
5. आनुपातिकता और न्यूनतम-हानि के सिद्धांतों को लागू करना।
6. निर्णय के कारणों को दर्ज करना।
7. जवाबदेही और समीक्षा सुनिश्चित करना।

इसलिए नैतिक दक्षता में अमूर्त नैतिक सिद्धांतों को जानने से अधिक शामिल है। इसके लिए अनिश्चितता और प्रतिस्पर्धी वैध हितों की स्थितियों के तहत तर्क करने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

अंततः, अच्छा प्रशासन नैतिक दुविधाओं को समाप्त नहीं करता है; बल्कि, यह पारदर्शी, निष्पक्ष और संवैधानिक रूप से उन्हें हल करने में सक्षम संस्थानों और अधिकारियों को विकसित करता है।

Dream | Dare | Deliver

करेंट अफेयर्स (Current Affairs)

Q5. “भारत का डेटा-सेंटर विस्तार विकास-पर्यावरण दुविधा के एक नए आयाम को दर्शाता है: डिजिटल बुनियादी ढांचा, हालांकि पारंपरिक उद्योग की तुलना में भौतिक रूप से कम दिखाई देता है, फिर भी इसका ऊर्जा, जल और स्थानिक पदचिह्न (spatial footprint) काफी बड़ा हो सकता है।” समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर (Sample Answer)

भारत का तीव्र डिजिटलीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का विस्तार डेटा-सेंटर बुनियादी ढांचे के लिए एक महत्वपूर्ण मांग पैदा कर रहा है। डेटा सेंटर क्लाउड कंप्यूटिंग, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, ई-कॉमर्स, वित्तीय प्रौद्योगिकी और एआई के लिए भौतिक नींव प्रदान करते हैं। हालाँकि, उनका विकास बिजली, पानी, भूमि, उत्सर्जन और शहरी वहन क्षमता से संबंधित प्रश्नों को तेजी से बढ़ा रहा है।

इंसाइट्सआईएस (InsightsIAS) द्वारा उद्धृत हालिया विश्लेषण से नोट किया गया है कि भारत की स्थापित डेटा-सेंटर क्षमता 2020 में लगभग 520 मेगावॉट से बढ़कर 2026 में लगभग 1.5 गीगावॉट हो गई है, जिसके 2030 तक

लगभग 6.5 गीगावॉट होने का अनुमान है। जैसे-जैसे AI वर्कलोड बढ़ेगा, डेटा सेंटरों से जुड़ी बिजली की खपत में काफी वृद्धि होने का अनुमान है।

पहली प्रमुख चिंता बिजली की खपत है। डेटा सेंटर लगातार काम करते हैं और उन्हें अत्यधिक विश्वसनीय बिजली की आवश्यकता होती है। AI वर्कलोड इस मांग को बढ़ा सकता है क्योंकि उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग में ऊर्जा-गहन प्रोसेसर और कूलिंग सिस्टम शामिल होते हैं। यदि वृद्धिशील मांग को मुख्य रूप से कार्बन-गहन बिजली के माध्यम से पूरा किया जाता है, तो डिजिटल विस्तार अप्रत्यक्ष रूप से ग्रीनहाउस-गैस उत्सर्जन को बढ़ा सकता है।

दूसरी चिंता पानी की खपत है। कई डेटा सेंटर पानी आधारित कूलिंग सिस्टम का उपयोग करते हैं। एक 100 मेगावॉट की सुविधा बहुत बड़ी मात्रा में पानी की खपत कर सकती है, विशेष रूप से कुछ कूलिंग कॉन्फ़िगरेशन के तहत। यह समस्या तब गंभीर हो जाती है जब सुविधाएं पहले से ही जल-तनावग्रस्त (water-stressed) शहरी क्षेत्रों में केंद्रित होती हैं।

तीसरा, डेटा-सेंटर विकास स्थानीय बुनियादी ढांचे पर दबाव बना सकता है। बड़ी सुविधाओं के लिए सबस्टेशन, ट्रांसमिशन क्षमता, बैकअप सिस्टम, भूमि, सड़कें और दूरसंचार कनेक्टिविटी की आवश्यकता होती है। यदि सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को मुख्य रूप से बिना किसी उपयुक्त लागत-साझाकरण तंत्र के निजी सुविधाओं की सेवा के लिए अपग्रेड किया जाता है, तो कुछ बुनियादी ढांचा लागत प्रभावी रूप से सामान्य उपभोक्ताओं पर स्थानांतरित हो सकती है।

चौथा, एक संभावित शहरी ताप अंतःक्रिया (urban heat interaction) है। कूलिंग सिस्टम अपशिष्ट ऊष्मा छोड़ते हैं, जबकि बढ़ता परिवेश का तापमान कूलिंग आवश्यकताओं को बढ़ा सकता है, जिससे शहरी गर्मी और ऊर्जा की मांग के बीच एक फीडबैक तंत्र बन जाता है। डेटा-सेंटर क्लस्टर के आसपास स्थानीयकृत तापमान प्रभावों के संबंध में हालिया विश्लेषणों ने चिंताओं को उजागर किया है।

इसके बावजूद, डेटा सेंटर भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा हैं। वे डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, वित्तीय लेनदेन, सरकारी सेवाओं, वैज्ञानिक कंप्यूटिंग और उभरती AI क्षमताओं का समर्थन करते हैं। इसलिए नीतिगत उद्देश्य डेटा-सेंटर विस्तार पर एक सरलीकृत प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।

एक अधिक उपयुक्त दृष्टिकोण **संसाधन-जवाबदेह डिजिटल बुनियादी ढांचा (resource-accountable digital infrastructure)** होगा। इसमें शामिल हो सकते हैं:

1. ऊर्जा और पानी की खपत का अनिवार्य प्रकटीकरण;
2. स्थान-विशिष्ट पर्यावरण मूल्यांकन;
3. जहाँ भी संभव हो कूलिंग के लिए पुनर्चक्रित या गैर-पेयजल का उपयोग;
4. क्लोज्ड-लूप और जल-कुशल कूलिंग प्रौद्योगिकियां;
5. अक्षय ऊर्जा की खरीद;
6. बैटरी भंडारण और मांग-प्रतिक्रिया तंत्र (demand-response mechanisms);
7. कुशल ट्रांसमिशन योजना;
8. जहाँ आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो अपशिष्ट-ऊष्मा पुनर्प्राप्ति (waste-heat recovery);
9. मजबूत ई-कचरा प्रबंधन;
10. वित्तीय प्रोत्साहनों को मापने योग्य स्थिरता परिणामों से जोड़ना।

एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्धांत **वहन-क्षमता-आधारित स्थान योजना (carrying-capacity-based location planning)** है। डेटा सेंटरों को केवल मौजूदा कनेक्टिविटी के कारण प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों में स्वचालित रूप से केंद्रित नहीं किया जाना चाहिए यदि वे स्थान गंभीर जल या बिजली की बाधाओं का सामना कर रहे हैं।

इसलिए चुनौती डिजिटलीकरण और पर्यावरण संरक्षण के बीच चयन करने की नहीं है, बल्कि डिजिटल बुनियादी ढांचे को नया रूप देने की है ताकि इसकी भौतिक संसाधन आवश्यकताएं पारिस्थितिक सीमाओं के अनुकूल रहें।

भारत का डेटा-सेंटर बूम आर्थिक रूपांतरण का एक महत्वपूर्ण घटक बन सकता है, लेकिन इसकी दीर्घकालिक व्यवहार्यता इस बात पर निर्भर करेगी कि देश ऊर्जा, पानी, भूमि और ग्रिड क्षमता को असीमित सार्वजनिक संसाधनों के बजाय पारिस्थितिक बाधाओं वाले आर्थिक इनपुट के रूप में देखता है या नहीं।

